एक ज़हरीला पक्षी - पिटोहुई

दिगंबर गाडगिल

कुछ साल पूर्व अगर किसी ने पूछा होता कि किसी ज़हरीले पक्षी का नाम बताइए और इस प्रश्न का उत्तर किसी ने नकारात्मक दिया होता, तो प्रश्नकर्ता इस उत्तर को सही मानकर उसकी काफी तारीफ करते। लेकिन ज़हरीले पक्षी की खोज आश्चर्यजनक ढंग से हुई। ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण में अनेक द्वीपों का एक समूह है। इस द्वीपसमूह के घने जंगल में इसका पता लगा। सन् 1930 तक न्यू गिनी के मेलनशियन्स नामक स्थानीय लोगों का बाहरी दुनिया से लगभग कोई संपर्क नहीं था। वहां सन 1992 में डबैचर नामक पक्षी वैज्ञानिक ने इसकी खोज की। वैसे उनका मिशन अन्य खोज कार्य से सम्बंधित था। उनके जाल में छोटा-सा लाल काले रंग का पक्षी आया। उन्होंने पक्षी को मुक्त किया। इस प्रयत्न में पक्षी ने उनकी उंगली पर चोंच से प्रहार किया। इस प्रहार के दाह से उन्होंने तुरन्त ही पक्षी को छोड़ दिया। अनायास ही उंगली मुंह में गई तो उनकी जीभ जल-सी गई। पूरे मुंह में आग-सी लग गई।

यह परिणाम उस पक्षी के काटने का था। उसके दंश से विषाक्तता हो गई थी। दरअसल वैज्ञानिक तो अपनी शोध यात्रा के निमित्त किन्हीं अलग ही परिंदों की तलाश में थे और उनके जाल में यह ज़हरीला पक्षी आ फंसा था। इस बहाने उन्हें इस बात का बोध हुआ कि पक्षी भी जहरीला हो सकता है, और होता है।

वैज्ञानिकों के लिए भले ही यह बात नई हो लेकिन स्थानीय लोग इस बात से खूब परिचित थे। उनकी नज़रों में उस पक्षी का कोई महत्व नहीं था क्योंकि वह अभक्ष्य था। उसे खाने का मतलब तीखी मिर्च को खाने के अनुभव को ही न्यौता देता था। मात्र उसके स्पर्श से भी इंसान खांसी से बदहाल हो जाता था। पूरा शरीर गमौरियों से भर जाता था। पूरे शरीर पर जलन होने लगती थी। इस बात से वे भलीभांति परिचित थे। वे अपनी भाषा में इस पक्षी को स्लेकयाट यानी कड़वा पक्षी कहते थे।

वैज्ञानिक और पक्षी निरीक्षकों ने इसे 'पिट-उ-ये' नाम दिया है। यह पक्षी pachyce phalidae नामक परिवार का सदस्य है। उसके 'पिटोहुई' जनेरा में पांच प्रजातियां हैं। इनसे असम्बंधित पक्षी इफ्रिटा भी ज़हरीला होता है। पिटोहुई की चोंच और पैर मजबूत होते हैं। इसका वजन सौ ग्राम के करीब होता है। यह भी कम आश्चर्यजनक तथ्य नहीं है कि ज़हर के अभाव में शायद यह पक्षी अपनी सुरक्षा न कर पाता; न ही जीवित रह पाता।

इन सब प्रजातियों में *पिटोहुई डाइकोरस* सबसे ज़हरीला है। उसका आकार लगभग नौ इंच का है। इसके ज़हर की तुलना मोनार्क तितली और ज़हरीले मेंढक से की जा सकती है। दरअसल तितली, पक्षी और मेंढक तीनों अलग-अलग समूह हैं। उनके जहर में पाई जाने वाली समानता अचरज में डाल देने वाली है। अगर इन तीनों में समानता ढूंढने का प्रयत्न किया जाए तो मात्र रंग में समानता दिखती है। मोनार्क तितली और पिटोहुई का रंग नारंगी ब्राउन काला है। उनका ज़हर अनेक प्रोटीनों का मिश्रण है। यह ज़हर उनके पेट, छाती और पंखों में समाया हुआ है। यह